कुलगीत

जय दीप्तिमान श्यामाप्रसाद कुल,
ज्ञानाश्रम जयति जय–जय।
बौद्धिक, नैतिक उन्नयन प्रखर,
उज्ज्वल इतिहास रहे भू–पर।। 1।।

विज्ञान, ज्ञान की तपोभूमि,
बिरसा, तिलका की त्याग भूमि।
है प्रेम, सभ्यता, अनुशासन,
निर्मल मधुसिक्त अभय तरुवर।। 2।।

सरहुल, करमा और अन्य पर्व,
औ, साल पलाश वंशी के स्वर।
जहाँ नृत्य, गीत सह मांदर से,
हैं देश प्रेम के राग अधर।। 3।।

हैं विविध ज्ञान समवेत जहाँ,
औ, छात्र उन्नयन लक्ष्य यहाँ।
क्रीड़ा, संस्कृति है मापदंड,
अक्षुण्ण समृद्धि के जय स्वर।। 4।।